चुटकले

प्रियंका कन्नौजिया
रूड़की

आओ हँसे–हँसाएं

सर्कस मालिक – कितने लापरवाह हो तुम लोग। शेर का पिंजरा खुला छोड़ रखा है।

नौकर – इसमें इतनी परेशानी की क्या बात है। शेर की चोरी कौन करेगा।

महिला – डॉक्टर साहब, मुझे अपने आपसे बात करने की आदत हो गई है।

डॉक्टर – इसमें हैरानी की क्या बात है ? यह आदत तो सबकी होती है।

महिला – लेकिन मैं अपनी बोर बाते नहीं सहन कर सकती, डॉक्टर।

लड़का – एक केला कितने का है।
दुकानदार – दो रूपये का।
लड़का – एक रूपये में दे दो।
दुकानदार – एक रूपये में तो केवल केले का छिलका मिलेगा।
लड़का – ये लो एक रूप्या, छिलका उतारकर केला दे दो।

बेटा – पापा–पापा मुझे कार दिला दो।
पिता – अबे नालायक, कार' का क्या करेगा ? ईश्वर ने दो टाँगें किसलिए दी हैं ?
बेटा – क्लच, ब्रेक और एक्सीलेटर दबाने के लिये।

माँ – बेटा, देखना गेहूँ सूख रहे हैं, कहीं गाय न खा जाए।
माँ – अरे–अरे गधा गेहूँ खा रहा है और तुम उसे हटा नहीं रहे हो।
बेटा – आपने तो गाय को हटाने को कहा था, ये तो गधा है।